द्रव्य गुण पर्याय

प्रस्तुतकर्ता –
प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

विश्व किसे कहते हैं?

- छह द्रव्यों के समूह को
- और द्रव्यों का कभी नाश न होने से
- विश्व का भी कभी नाश नहीं होता
- मात्र पर्याय पलटती है

द्रव्य किसे कहते हैं?

गुणों के समूह को

द्रव्य की अन्य परिभाषा

- द्रव्य, गुण और पर्यायवान होता है (गुणपर्ययवद् द्रव्यम्)
- सत् द्रव्यलक्षणम्
- उत्पाद व्यय ध्रौव्य यक्तम् सत्

गुण किसे कहते हैं?

जो द्रव्य के सम्पूर्ण

भागों (प्रदेशों)

अवस्थाओं (पर्यायों)

में रहता है

अन्य शब्दों में

जो द्रव्य के सम्पूर्ण हिस्सों और हालतों में रहता है

जैसे - ज्ञान आत्मा का गुण है

ज्ञान आत्मा के

समस्त भागों में पाया जाता है

ऊपर से नीचे तक

समस्त अवस्थाओं में पाया जाता है

निगोद से लेकर मोक्ष तक

आत्मा में ज्ञान जैसे कितने गुण हैं?

- अनंत
- प्रत्येक द्रव्य में अपने-अपने अलग-अलग अनंत गुण हैं

क्या आत्मा अनंत गुणों का भण्डार है?

- ऐसा नही है
- क्योंकि आत्मा अलग हो और गुण उसमें भरे हों,ऐसा नही है
- जैसे-डब्बे में सामान जैसे नहीं
- शक्कर में मिठास जैसे

आत्मा तो
गुणमय ही है

वह तो गुणों का
अखण्ड पिण्ड है

पर्याय किसे कहते हैं?

गुणों के परिणमन को पर्याय कहते हैं

गुणों के प्रकार

सामान्य गुण

जो सब द्रव्यों में रहते हैं

विशेष गुण

जो अपने-अपने द्रव्य में रहते हैं

सामान्य गुण कितने हैं ?

- अनेक
- पर उनमें छह मुख्य हैं

सामान्य गुण कौन-कौन से हैं?

- अस्तित्व
- वस्तुत्व
- प्रमेयत्व
- द्रव्यत्व
- अगुरुलघुत्व
- प्रदेशत्व

अस्तित्व गुण किसे कहते हैं ?

जिस शक्ति के कारण
द्रव्य का कभी भी
अभाव (नाश) न हो

अस्तित्व गुण - विशेष

- प्रत्येक द्रव्य की सत्ता स्वयम् से है
- उसे किसी ने बनाया नहीं है
- न ही उसे कोई मिटा ही सकता है
- द्रव्य अनादि अनंत है

अस्तित्व गुण - लाभ

- अनादि अनंत इसलिये निर्भयता आती
- ईश्वर कर्ता नहीं
- मैं पर का कर्ता नहीं
- पर मेरा कर्ता नहीं

वस्तुत्व गुण किसे कहते हैं ?

जिस शक्ति के कारण
द्रव्य में अर्थ क्रिया
(प्रयोजनभूत क्रिया) हो

वस्तुत्व गुण - विशेष

- कोई भी वस्तु लोक में पर के प्रयोजन की नहीं है
- पर प्रत्येक वस्तु अपने-अपने प्रयोजन से युक्त है,

जैसे जानने रुप
क्रिया जीव स्वयं
करता, अन्य नहीं

द्रव्यत्व गुण किसे कहते हैं ?

जिस शक्ति के कारण
द्रव्य की अवस्था
निरन्तर बदलती रहे

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

द्रव्यत्व गुण - विशेष

- एक द्रव्य में परिवर्तन का कारण कोई दूसरा द्रव्य नहीं है

द्रव्यत्व गुण - लाभ

- द्रव्य कूटस्थ नहीं
- संसार पर्याय का अभाव कर मोक्ष हो सकता
- किसी से द्वेष नहीं करना, उसकी पर्याय पलट जाऐंगी

इन तीनों गुण के कारण द्रव्य का क्या नाम हैं

गुण	नाम
अस्तित्व	सत्
वस्तुत्व	वस्तु
द्रव्यत्व	द्रव्य

तीनों में अंतर

गुण	
अस्तित्व	‘‘है’’
वस्तुत्व	‘‘निरर्थक नहीं है’’
द्रव्यत्व	‘‘निरन्तर परिणमनशील है’’

प्रमेयत्व गुण किसे कहते हैं ?

जिस शक्ति के कारण
द्रव्य किसी न किसी के
ज्ञान का विषय हो

प्रमेयत्व गुण - विशेष

- बहुत-सी सूक्ष्म वस्तुएँ इन्द्रियों से दिखाई ही नहीं देती
- पर केवलज्ञान में सब दिखाई देती है

प्रमेयत्व गुण - लाभ

- आत्मा भी जाना जा सकता, उसे जानने की प्रेरणा मिलती
- केवलज्ञान होता हैं, उसे जानने की प्रेरणा मिलती

अगुरुलघुत्व गुण किसे कहते हैं ?

जिस शक्ति के कारण द्रव्य में द्रव्यपना कायम रहता है

- एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं हो जाता
- एक गुण दूसरे गुण रूप नहीं हो जाता
- अनंत गुण बिखर कर अलग-अलग नहीं हो जाते

अगुरुलघुत्व गुण - विशेष

- हम शरीर रुप नहीं हो सकते
- ज्ञान नष्ट हो सुख हो जाये, ऐसा नहीं होता
- खंड- खंड हो जाये, ऐसा नहीं होता

प्रदेशत्व गुण किसे कहते हैं ?

जिस शक्ति के कारण
द्रव्य का कोई न कोई
आकार अवश्य रहता है

प्रत्येक द्रव्य के विशेष गुण क्या हैं?

जीव	ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्यादि
पुद्गल	स्पर्श, रस, गंध, वर्णादि
धर्म	गतिहेतुत्वादि
अधर्म	स्थितिहेतुत्वादि
आकाश	अवगहानत्वहेतुत्वादि
काल	परिणमनहेतुत्वादि

अन्य प्रकार से गुण के भेद

साधारण	साधारण-असाधारण	असाधारण
जो सभी द्रव्यों में पाए जाएँ	जो सभी में नहीं, पर एक से अधिक द्रव्यों में पाए जाएँ	जो अपने-अपने द्रव्य में ही पाए जाएँ
अस्तित्व, वस्तुत्व	अमूर्तत्व, अचेतनत्व	ज्ञान, दर्शन, रस, गंध

पर्याय के प्रकार

व्यंजन पर्याय

प्रदेशत्व गुण का विकार

अर्थ पर्याय

प्रदेशत्व के अलावा शेष सभी गुणों के विकार

व्यंजन पर्याय

स्वभाव व्यंजन पर्याय

बिना किसी निमित्त से होने वाली व्यंजन पर्याय

विभाव व्यंजन पर्याय

दूसरे के निमित्त से होने वाली व्यंजन पर्याय

व्यंजन पर्याय- उदाहरण

स्वभाव व्यंजन पर्याय

जैसे – सिद्ध पर्याय

विभाव व्यंजन पर्याय

जैसे – मनुष्य पर्याय

अर्थ पर्याय

स्वभाव अर्थ पर्याय

बिना किसी निमित्त से होने वाली अर्थ पर्याय

विभाव अर्थ पर्याय

दूसरे के निमित्त से होने वाली अर्थ पर्याय

अर्थ पर्याय -उदाहरण

स्वभाव अर्थ पर्याय

जैसे - ज्ञान गुण की केवलज्ञान पर्याय

विभाव अर्थ पर्याय

जैसे - ज्ञान गुण की मतिज्ञान पर्याय

द्रव्य, गुण पर्याय को जानने से क्या लाभ हैं

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

‘‘हम दीन गुणहीन हैं’’ – ऐसी भावना नही रहती

- कैसे ?
- क्योंकि हम तुम भी तो सब जीव द्रव्य हैं
- और द्रव्य गुणों का पिण्ड होता है
- अत: हम भी गुणों के पिण्ड हैं

अनंत निर्भयता आती

- कैसे ?
- क्योंकि मेरा कोई नाश नहीं कर सकता है

विभाव पर्याय का नाश होता - ऐसी श्रद्धा आती

- कैसे ?
- क्योंकि ज्ञान चारित्र सुख आदि हमारे गुण है
- उनका कभी नाश नहीं होता
- अज्ञान और राग-द्वेष आदि पर्यायों का ही अभाव हो जाता हैं
- आत्मा के आश्रय से